परिभाषाएँ :- विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने इस नियम की भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषाएँ प्रस्तुत किये हैं:-

मार्शल के अनुसार- "यदि किसी व्यक्ति के पास ऐसी वस्तु है जिसे वह विभिन्न प्रकार के प्रयोग कर सकता है, तो वह इसका अनेक प्रयोगों में इस प्रकार वितरण करेगा कि सीमांत उपयोगिता प्रत्येक के समान हो"।

प्रो० लिप्सी के अनुसार- "जब प्रत्येक दिशा में व्यय की सीमांत इकाई से उपयोगिता में समान वृद्धि होती है, तो उपयोगिता अधिकतम होगा।

इस प्रकार यह नियम बताता है कि अन्य बातों के समान रहने पर उपभोक्ता अपनी आय को विभिन्न प्रयोगों में व्यय करके तब अधिकतम कुल उपयोगिता प्राप्त करेगा जब वह अपने व्यय को विभिन्न वस्तु के क्रय पर इस प्रकार विभाजित करता है कि मुद्रा की अंतिम इकाई से प्राप्त होने वाली उपयोगिता प्रत्येक व्यय के लिए समान हो जाए।

नियम की मान्यताएँ :- (Assumption of the Law) →

इस नियम की निम्नलिखित मान्यताएँ हैं:-

(i) उपभोक्ता की आय सीमित है।
(ii) उपभोक्ता अपनी सीमित आय से एक से अधिक प्रयोगों में व्यय करता है।
(iii) पूर्ण प्रतियोगिता के कारण वस्तु की कीमत स्थिर है।
(iv) उपभोक्ता विवेकशील होता है।
(v) मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर है।
(vi) सीमांत उपयोगिता संख्यात्मक रूप से मापनीय है।

नियम की व्याख्या :- (Explanation of the Law)

सम-सीमांत उपयोगिता नियम को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया जाय कि किसी उपभोक्ता के पास 6 रुपये हैं। जिसे वह A, B, C तीन वस्तुओं पर व्यय करना चाहता है। यह भी माना गया है कि इन तीनों वस्तुओं की प्रत्येक इकाई का मूल्य 1 रुपया है। इन वस्तुओं से उपभोक्ता को जो सीमांत उपयोगिता मिलती है उसे नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

वस्तु की इकाई	A की सीमांत उपयोगिता	B की सीमांत उपयोगिता	C की सीमांत उपयोगिता
1	30	25	15△
2	20	15△	10
3	15△	5	5
4	10	3	2
5	8	2	1

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीनों वस्तुओं (A, B, C) की क्रमागत इकाईयों से प्राप्त होनेवाली सीमांत उपयोगिता क्रमशः घटती जाती है, क्योंकि सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम लागू होता है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि तब मिलेगी जब वह 3 रुपये A वस्तु 2 रुपये B वस्तु और 1 रुपये C वस्तु पर खर्च करे ऐसा करने से उसे 120 के बराबर कुल उपयोगिता प्राप्त होती है।

जो नीचे तालिका में दर्शाया गया है —

रुपये की इकाई	वस्तु का नाम	उपयोगिता
1 रु०	A	30
2 रु०	B	25
3 रु०	A	20
4 रु०	C	15
5 रु०	B	15
6 रु०	A	15

कुल उपयोगिता = 120

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उपभोक्ता अपना पहला रुपया A वस्तु दूसरा रुपया B वस्तु तीसरा रुपया पुनः A वस्तु चौथा रुपया C वस्तु पाँचवा रुपया पुनः B वस्तु और छठा रुपया पुनः A वस्तु पर क्रमशः खर्च करेगा। तो इस उपभोक्ता को अधिकतम संतोष प्राप्त होगा। क्योंकि इसकी कुल उपयोगिता 120 के बराबर है। यदि वह किसी दूसरे तरीके से अपने रुपये को खर्च करता है तो उसे 120 के बराबर कुल उपयोगिता नहीं मिलेगी। उपभोक्ता को अपनी मुद्रा से तीनों वस्तुओं पर बराबर सीमांत उपयोगिता (15) प्राप्त होती है।

सम-सीमांत उपयोगिता नियम को रेखाचित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। तीनों वस्तुओं की प्रत्येक इकाई का मूल्य बराबर है। इन वस्तुओं की विभिन्न इकाइयों से उपभोक्ता को जो सीमांत उपयोगिता मिलती है उसे नीचे चित्र में सीमांत उपयोगिता रेखा MU द्वारा दर्शाया गया है।

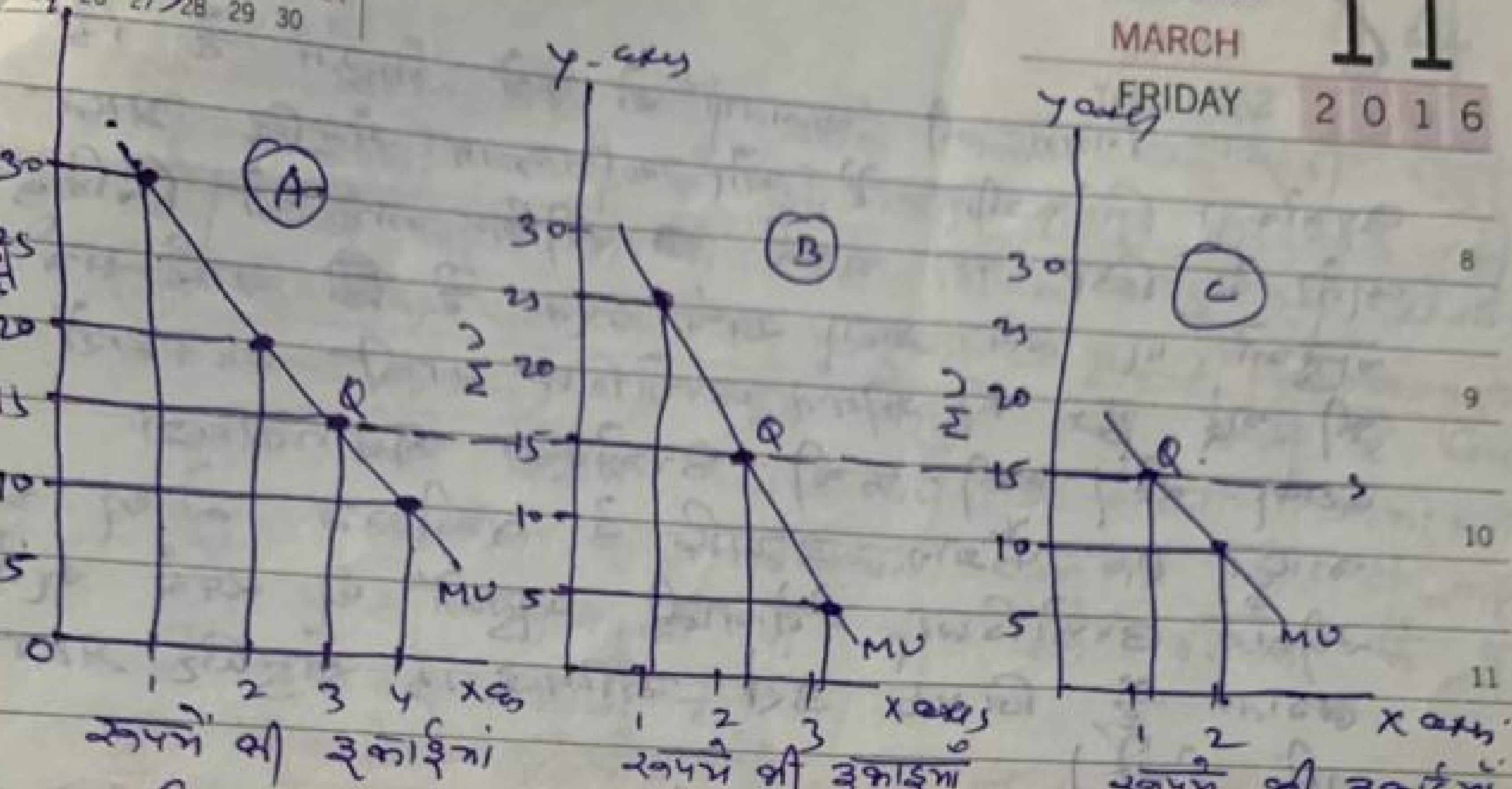

चित्र-1 चित्र-2 चित्र-3

उपरोक्त चित्रों में X-अक्ष में रुपयों की इकाइयों
को तथा Y-अक्ष में सीमांत उपयोगिता को दर्शाया गया है। 1
चित्र-1 में A वस्तु की सीमांत उपयोगिता चित्र 2 में B
वस्तु की सीमांत उपयोगिता और चित्र-3 में C वस्तु की 2
सीमांत उपयोगिता को दर्शाया गया है। SS सम सीमांत
उपयोगिता रेखा है। यह रेखा बताती है कि उपभोक्ता 3रु० 3
A पर 2रु० B पर तथा 1रु० C पर खर्च करेगा, तभी
उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होगी क्योंकि तभी 4
रुपये की तीनों वस्तुओं पर सीमांत उपयोगिता बराबर होगी।
चित्र में सीमांत उपयोगिता की बराबरी को Q बिन्दुओं 5
द्वारा दर्शाया गया है।

नियम की सीमाऐं (Limitations) → सीमांत उपयोगिता 6
ह्रास नियम की निम्नलिखित सीमाऐं हैं:—

(1) उपभोक्ता की अज्ञानता (Ignorance of the Consumer) →

इस नियम की मान्यताओं से हमें मालूम है कि उपभोक्ता विवेकशील है और अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए वह अपनी सीमित आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार खर्च करता है ताकि खर्च की गई मुद्रा की सीमांत उपयोगिता सभी अवस्थाओं में बराबर रहे। कभी-कभी उपभोक्ता अज्ञानतावश आदत एवं फैशन इत्यादि के वशीभूत होकर कम सीमांत उपयोगिता देनेवाली वस्तुओं पर खर्च करने लगता है, जिससे उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त नहीं होती।

(2) वस्तुओं की अविभाज्यता :- (Indivisibility of commodity) →

कुछ ~~वस्तुओं~~ वस्तुएं ऐसी हैं जिनका विभाजन संभव नहीं हो सकता तथा उनके उपयोग को घटाया बढ़ाया नहीं जा सकता जैसे मोटर का मकान इत्यादि। ऐसी वस्तुओं के संबंध में खर्च की जानेवाली सीमांत उपयोगिता को समान करने में कठिनाई होती है।

(3) वस्तुओं का टिकाऊपन (Durability of Goods) →

कुछ टिकाऊ वस्तुएं जैसे, आलमारी मकान रेडियो इत्यादि का प्रयोग लम्बे समय तक होते रहता है। अतः इस तरह की वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता का पता लगाना कठिन हो जाता है। इस प्रकार वस्तुओं का टिकाऊपन इस नियम के प्रयोग में कठिनाई उत्पन्न करता है।

(4) रीति रिवाज एवं फैशन का प्रभाव :- (Effects of customs & fashions) → प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य रीति रिवाज एवं फैशन का गुलाम

होता है और उसके बदले उसे ऐसी वस्तुएँ भी खरीदनी पड़ती हैं जो उसके लिए आवश्यक नहीं हैं। ऐसी अवस्था में यह नियम लागू नहीं होता है।

⑤ **उपभोग का निश्चित अनुपात :- (Fixed proportion to consumption) →** कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिनके उपभोग को घटाया बढ़ाया नहीं जा सकता। उपभोक्ता उनका उपभोग एक निश्चित अनुपात में ही करता है। ऐसी अवस्था में भी इस नियम के प्रयोग में कठिनाई होती है।

⑥ **उपभोग नियंत्रण (Control of Consumption) →** कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि सरकार कुछ वस्तुओं के उपभोग पर नियंत्रण लगा देती है। ऐसी अवस्था में वस्तु के उपभोग का निषेध कर दिया जाता है; जिससे उपभोक्ता चाहते हुए भी उपभोग नहीं कर पाता है। इस तरह के वस्तुओं पर भी यह नियम को लागू करने में कठिनाई होती है।

⑦ **मूल्य में परिवर्तन का प्रभाव :- (Effect of Price change)** वस्तु के मूल्य में परिवर्तन होने पर भी इस नियम को लागू करने में कठिनाई होती है क्योंकि ऐसी अवस्था में वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता की तुलना आसानी से नहीं की जा सकती। मूल्य के परिवर्तन के कारण उपभोक्ता को अपनी उपभोग की तालिका बदलनी पड़ती है। इस कठिनाई के कारण भी उपभोक्ता को इस नियम के पालन करने में कठिनाई होती है।

(8) बजट की अनिश्चित अवधि (Indefinite Budget Period) →

उपभोक्ताओं को बजट बनाने की अवधि प्रायः निश्चित नहीं होती। अधिकांश उपभोक्ता तो बजट बनाते ही नहीं और अपनी आमदनी ऐसे ही खर्च करते चले जाते हैं। ऐसी वस्तुओं से प्राप्त सीमांत उपयोगिता का पता लगाना कठिन होता है।

(9) उपयोगिता की माप की कठिनाई (Difficulty of measurement of utility) →

अर्थशास्त्री इस नियम के विरुद्ध यह आपत्ति करते हैं कि उपयोगिता की माप करना कठिन है क्योंकि उपयोगिता उपभोक्ता का एक मानसिक गुण है जिससे उपयोगिता की माप नहीं की जा सकती। अतः इस नियम को लागू नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार सम सीमांत उपयोगिता नियम के विरुद्ध अनेक आपत्तियाँ उठायी गई हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इस नियम का कोई महत्व नहीं है।

महत्व - Importance

सम सीमांत उपयोगिता नियम का महत्व निम्नलिखित क्षेत्रों में होता है:—

(1) उपभोग के क्षेत्र में (Consumption) →

उपभोग के क्षेत्र में इस नियम का प्रयोग निम्नलिखित तीन अवस्थाओं में किया जाता है:—

पहली अवस्था :- उपभोक्ता अपनी सीमित आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार खर्च करना चाहेगा कि उसे अधिकतम संतोष प्राप्त हो। इसके लिए वह अपनी मुद्रा को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार खर्च करेगा कि सभी वस्तुओं पर मुद्रा की सीमांत उपयोगिता बराबर रहे।

दूसरी अवस्था :- उपभोक्ता हमेशा यह कोशिश करता है कि अपनी आय में से कितना खर्च वह वर्तमान में करें और कितना भविष्य के लिए बचाकर रखें। इसके लिए उपभोक्ता अपनी मौद्रिक आय का वर्तमान उपभोग एवं बचत (अथवा भविष्य के उपभोग) के बीच इस प्रकार वितरण करता है ताकि मुद्रा की सीमांत उपयोगिता दोनों अवस्थाओं में बराबर हो जाये।

तीसरी अवस्था :- कभी-कभी उपभोक्ता को ऐसी वस्तुओं का भी उपभोग करने का मौका आता है जिसका विभिन्न प्रयोगों में प्रयोग किया जाता है। तब उपभोक्ता उस तरह की वस्तुओं का इस प्रकार प्रयोग करेगा कि वस्तु की सीमांत उपयोगिता आपस में बराबर हो जाय। जैसे - बिजली का प्रयोग।

(2) उत्पादन के क्षेत्र में (Production) →

एक उत्पादक हमेशा सीमित साधनों से अधिक उत्पादन करके अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह प्रतिस्थापन के नियम की सहायता से साधनों का उचित संयोग ढूंढता है। प्रत्येक उत्पादक समय-समय पर उत्पादन के साधनों (भूमि, श्रम एवं पूंजी) आदि की

(4) वितरण के क्षेत्र में (Distribution)

वितरण के क्षेत्र में साधनों के पुरस्कार को निश्चित करने के लिए भी इस नियम का सहारा लिया जाता है। उत्पादन के प्रत्येक साधन का पुरस्कार उसकी सीमांत उत्पत्ति के बराबर होता है। अतः उत्पादक किसी साधन का प्रयोग तब तक करता है जब तक साधन की सीमांत उत्पत्ति उसके लिए गए पुरस्कार (जैसे- लगान, मजदूरी, ब्याज एवं मुनाफा) के बराबर न हो जाए। इस साधनों के पुरस्कार तय करने में उत्पादक को इस सिद्धांत से सहायता मिलती है।

(5) राजस्व के क्षेत्र में (Public Finance)

अधिकतम सामाजिक लाभ सिद्धांत राजस्व का मूलभूत सिद्धांत है, जिसके द्वारा राजस्व की क्रियाओं का उच्च उद्देश्य जनता को अधिकतम लाभ प्राप्त कराना होता है। लेकिन इस सिद्धांत की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि करदाताओं पर इस प्रकार का कर लगाये जाये जिससे प्रत्येक करदाता को समान सीमांत त्याग का वहन करना पड़े। उसी प्रकार सरकार को करों से प्राप्त आय को इस प्रकार खर्च करना चाहिए, ताकि खर्च की विभिन्न मदों पर खर्च की रकम से प्राप्त सीमांत उपयोगिता बराबर हो जाय। इस प्रकार राजस्व के क्षेत्र में भी सम-सीमांत उपयोगिता नियम का सहारा लिया जाता है।

Sem - I ECO

Dr. N. N. Mahto

Q → तटस्थता वक्र विश्लेषण के अर्थ और मान्यताओं की विवेचना कीजिए तथा विशेषताओं को भी दर्शाइए।

Explain the meaning & assumption of Indifference curve Analysis. Show the properties of Indifference curve.

Ans: → अर्थशास्त्र में उदासीनता वक्र रेखाओं का प्रयोग सबसे पहले 1881 ई० में प्रो० एजवर्थ (Edgeworth) ने अपनी पुस्तक Mathematical Psychics में किया था। लेकिन उन्होंने उसका प्रयोग केवल दो व्यक्तियों के बीच विनिमय की संभावनाओं की व्याख्या करने के लिए किया उपभोक्ता की माँग की व्याख्या नहीं की। 1892 ई० में फिशर (Fisher) ने भी स्वतंत्र रूप से उदासीनता वक्र रेखाओं की चर्चा की, लेकिन उनका विश्लेषण प्रतिस्थापक एवं पूरक वस्तुओं तक ही सीमित रहा। उपभोग के क्षेत्र में उदासीनता वक्र रेखाओं का वास्तविक प्रयोग का श्रेय पैरेटो को जाता है, जिन्होंने 1909 ई० में इस सिद्धांत का विश्लेषण किया। सन 1915 ई० में रूसी अर्थशास्त्री स्लट्स्की (Slutsky) ने भी उदासीनता वक्र रेखाओं का जिक्र किया। लेकिन उदासीनता वक्र विश्लेषण की सफल व्याख्या का श्रेय प्रो० हिक्स (J.R. Hicks) एवं एलेन (R.G.D Allen) को है जिन्होंने 1934 में अपनी लेख में उदासीनता वक्र रेखाओं का प्रयोग किया। बाद में प्रो० हिक्स ने अपनी पुस्तक Value & Capital एवं Revision of Demand theory में इनकी विस्तारपूर्वक व्याख्या की।

उदासीनता वक्र वह वक्र है जिसका प्रत्येक बिन्दु दो वस्तुओं के ऐसे संयोगों को बताता है जिससे किसी उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है।

~~विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने उदासीनता वक्र को भिन्न-भिन्न ढंग से प्रस्तुत की है।~~

उपभोक्ता का व्यवहार उसकी उदासीनता अनुसूची द्वारा (Indifference Schedule) द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। उपभोक्ता को समान संतुष्टि देनेवाली दो वस्तुओं के विभिन्न संयोग उदासीनता अनुसूची बनाते है। इसी उदासीनता अनुसूची को ग्राफ के रूप में प्रदर्शित करके उदासीनता वक्र प्राप्त किया जाता है।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने उदासीनता वक्र की भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषा प्रस्तुत की है।—

<u>वॉटसन के शब्दों में</u>- "उदासीनता अनुसूची दो वस्तुओं के संयोगों की अनुसूची है, जिसको इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि उपभोक्ता उन संयोगों के प्रति उदासीन होता है और किसी एक को अन्य की तुलना में वरीयता नहीं देता।

<u>प्रो० मेयर्स</u> के अनुसार:- उदासीनता अनुसूची वह अनुसूची है जो कि दो वस्तुओं के ऐसे विभिन्न संयोगों को बताती है जिनसे किसी व्यक्ति को समान संतोष प्राप्त होता है। यदि इस उदासीनता अनुसूची को एक रेखा के रूप में दिखाया जाए तो उदासीनता वक्र रेखा प्राप्त होता है।

<u>मान्यताएँ (Assumption)</u> → उदासीनता वक्र विश्लेषण के निम्नलिखित मान्यताएँ है।—

(i) उपभोक्ता विवेकपूर्ण है।

(ii) उपभोक्ता को उदासीनता मानचित्र की जानकारी है।

They are able because they think they are able.

(iii) उपभोग की जानेवाली वस्तु विभाज्य है।
(iv) उपभोक्ता की आय सीमित है।
(v) उपभोक्ता को वस्तु की कीमत की जानकारी होती है।
(vi) वस्तुओं की कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
(vii) बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति होती है।

उदासीनता वक्र विश्लेषण की व्याख्या (Explanation) :→

नीचे दिए गए उदासीनता अनुसूची के आधार पर इसकी व्याख्या की जा सकती है। माना किसी उपभोक्ता दो वस्तुएँ सेब और आम का उपभोग करना चाहता है, तो वह इस प्रकार उपभोग करेगा।

सेब	1	2	3	4
आम	10	7	5	4

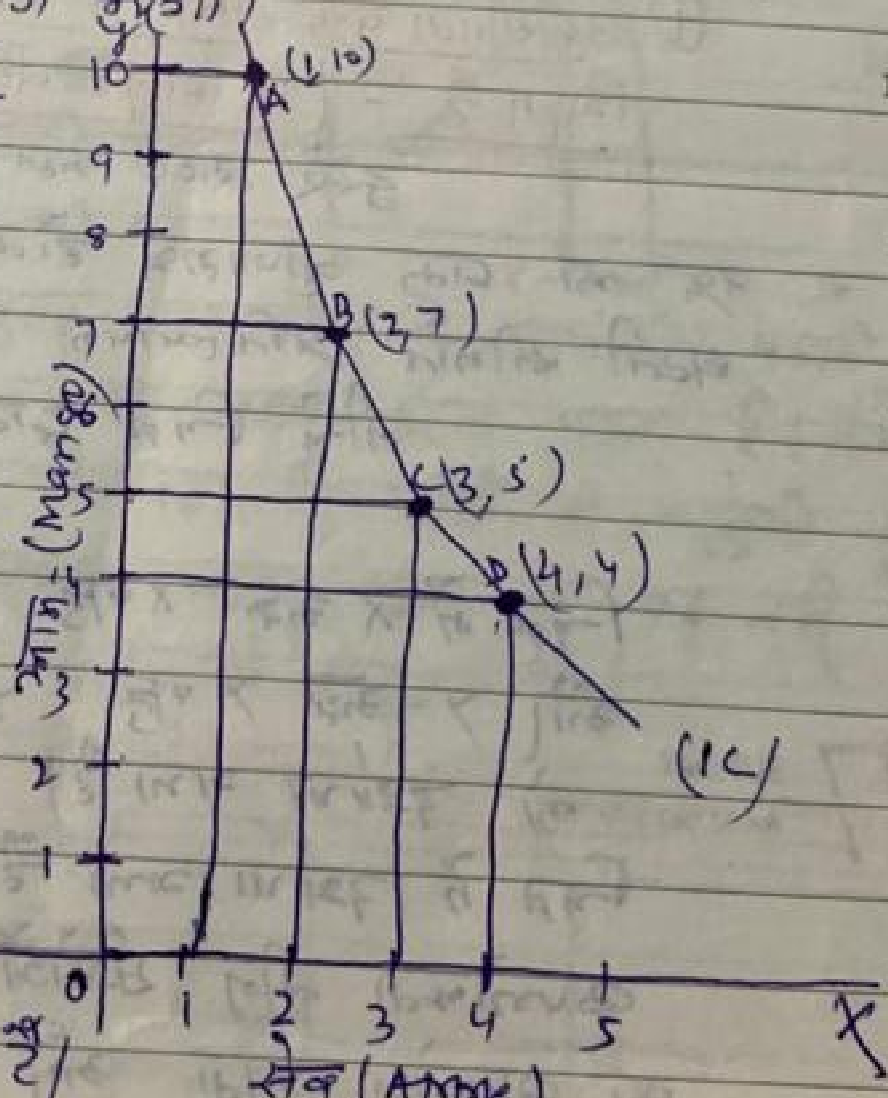

उपरोक्त उदासीनता अनुसूची के आधार पर उदासीनता वक्र को चित्र में स्पष्ट किया गया है। चित्र में X-अक्ष पर सेब की इकाइयाँ प्रदर्शित की गई है। उनकी संख्या बायें से दायें की ओर बढ़ती है, Y-अक्ष में आम की इकाइयाँ प्रदर्शित की गई है।

चित्र में A, B, C, D बिन्दु सेब तथा आम के विभिन्न संयोगों को व्यक्त करते हैं। A बिन्दु पर 10 आम और 1 सेब से उसे जितनी संतुष्टि मिलेगी उतनी ही B बिन्दु पर 7 आम और 2 सेबो से संतुष्टि मिलेगी, अथवा C बिन्दु पर 5 आम और 3 सेबों से तथा

D-बिन्दु पर 4 केला और 4 सेब से संतुष्टि मिलती। यदि A,B,C,D बिन्दुओं को जोड़ दिया जाए तो IC (उदासीनता वक्र) मिलता है। इस वक्र पर जितने बिन्दु हैं, वे सभी दो वस्तुओं के संयोगों को प्रकट करते हैं जो उपभोक्ता को समान संतुष्टि देते हैं और जिनके मध्य उपभोक्ता तटस्थ रहता है।

उदासीनता वक्र की विशेषताएं (Properties of IC)

उदासीनता वक्र की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:—

(i) उदासीनता वक्र बायें से दायें की ओर नीचे की ओर गिरता है:- (IC slops downwards from left to right)

दूसरे शब्द कहा जा सकता है कि उदासीनता वक्र का ढाल ऋणात्मक होता है। इसका मुख्य कारण घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर है (DMRS)। नीचे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

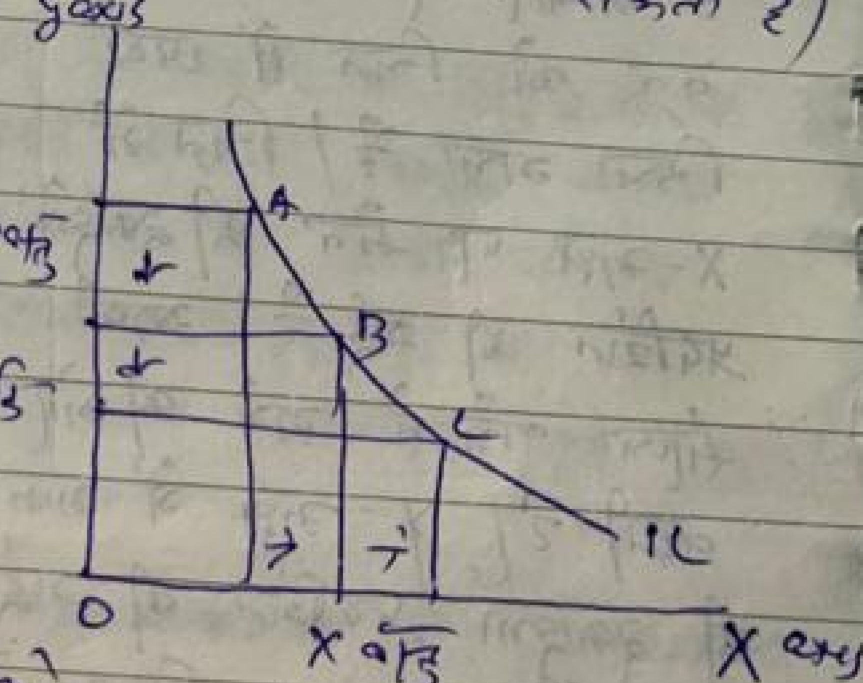

चित्र में X अक्ष X वस्तु और Y-अक्ष Y वस्तु को दर्शाया गया है। चित्र में दर्शाया गया है कि उपभोक्ता तीन संयोगों का उपभोग करता और तीनों संयोगों उपभोक्ता को समान संतुष्टि मिलती है। उपरोक्त चित्र में स्पष्ट है कि जब Y वस्तु की मात्रा बढ़ाता है तब X वस्तु की मात्रा कम करता है, लेकिन दोनों वस्तुओं संयोगों पर उपभोक्ता समान संतुष्टि मिलती है।

संक्षेप में इसे इस प्रकार भी दर्शाया जा सकता है।

x↑	y↓
y↑	x↓

(i) उदासीनता वक्र ऊपर उठता हुआ नहीं हो सकता (An IC cannot slop upwards)।

चित्र में y अक्ष में y-वस्तु और x-अक्ष में x-वस्तु को दर्शाया गया है। चित्र दर्शाया गया है कि जब y-वस्तु की इकाई बढ़ती है तो x-वस्तु की इकाई भी बढ़ रही है जबकि नियमानुसार एक वस्तु के उपभोग बढ़ाने पर दूसरे वस्तु के उपभोग का त्याग करना पड़ता है। लेकिन इस परिस्थिति ऐसा नहीं हो रहा है, दोनों ही वस्तुओं की उपभोग की जानेवाली इकाई अथवा मात्रा में बढ़ रही है, अतः IC ऊपर की तरफ नहीं हो सकता है।

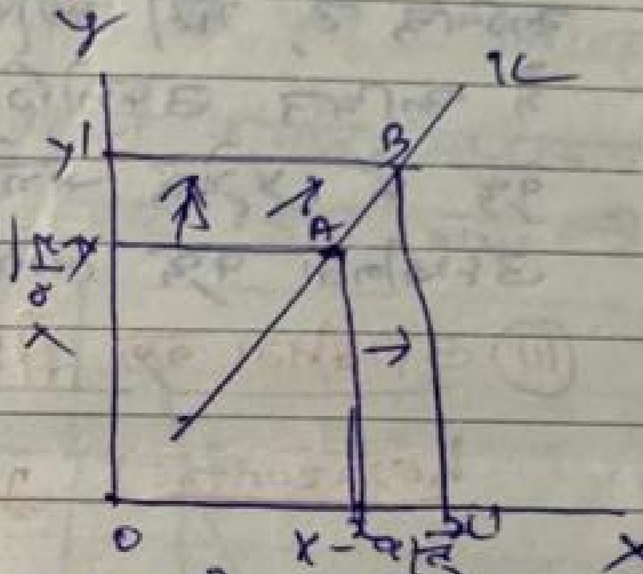

(ii) उदासीनता वक्र लम्बवत नहीं हो सकता (IC cannot be vertical)

उदासीनता वक्र लम्बवत नहीं हो सकता चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है। इस चित्र में x-अक्ष में x-वस्तु और y-अक्ष में y वस्तु को दर्शाया गया है। चित्र के अनुसार A संयोग में Oy मात्रा में y-वस्तु तथा Ox मात्रा में x x-वस्तु

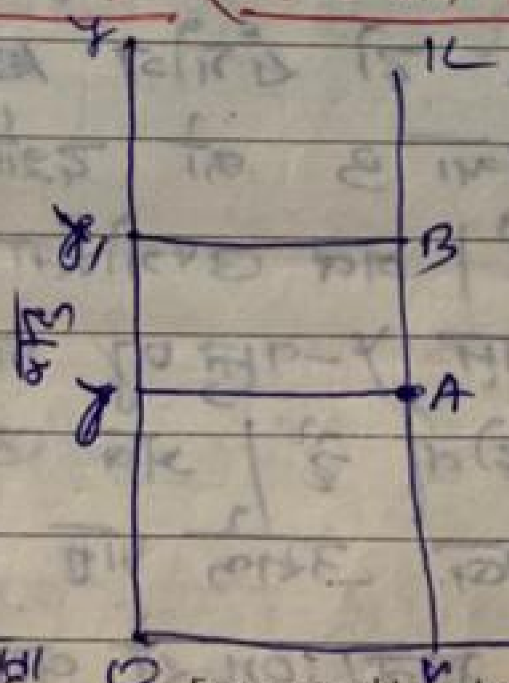

वस्तु को लिया गया है। जब उपभोक्ता A संयोग से B संयोग में आता है तब वह OY_1 मात्रा में Y वस्तु को OX मात्रा में X वस्तु का उपभोग करता है। इस अवस्था में X-वस्तु की मात्रा पूर्ववत रहती है, जब Y वस्तु की मात्रा में OY_1 के बराबर वृद्धि होती है। इस प्रकार A संयोग की अपेक्षा B संयोग में वस्तुओं की मात्रा अधिक है, यही कारण है कि उपभोक्ता को B संयोग में अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी। जबकि उदासीनता वक्र के प्रत्येक संयोग बराबर संतुष्टि देते हैं। अतः उदासीनता वक्र लम्बवत नहीं हो सकता है।

(iii) उदासीनता वक्र क्षैतिजीय नहीं हो सकता (IC can't be horizontal) →

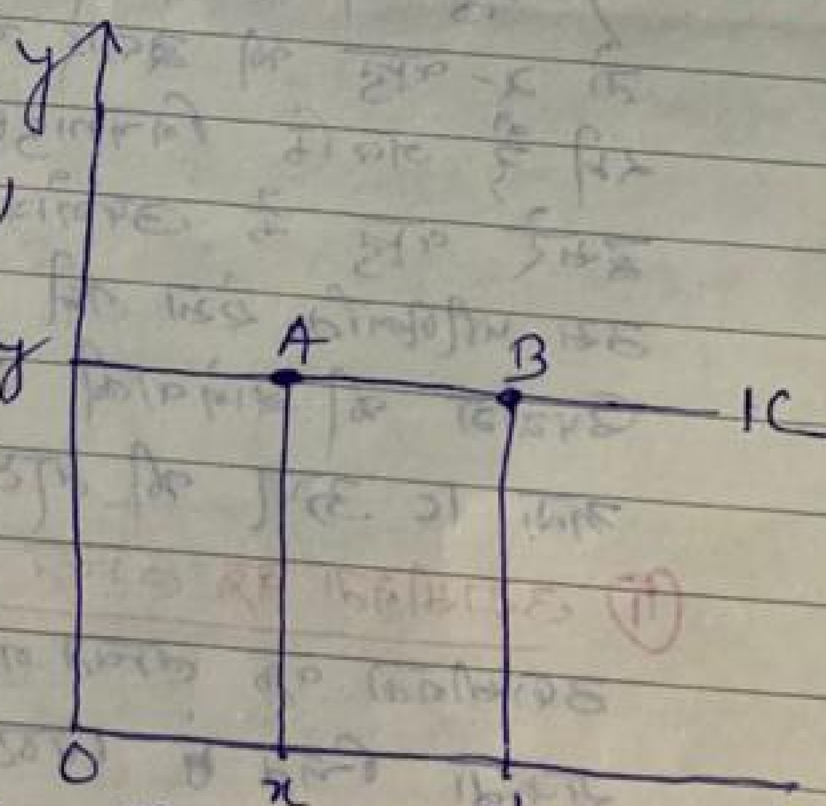

उदासीनता वक्र X-अक्ष समान्तर नहीं हो सकता है। इस स्थिति को इस चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है। चित्र में उदासीनता वक्र पर वस्तुओं के दो संयोग A तथा B को दर्शाया गया है। जब उपभोक्ता A संयोग में रहता है तब उसके पास Y-वस्तु OY मात्रा में तथा X वस्तु OX मात्रा में होती है। जब उपभोक्ता B संयोग पर पहुंचता है तब उसके पास Y वस्तु पूर्ववत रहती है परन्तु X-वस्तु मात्रा OX से बढ़कर OX_1 हो जाती है। अतः A संयोग से मिलने वाली उपयोगिता की तुलना में B संयोग से

rity is a feeble reed.

मिलने वाली उपयोगिता अधिक है। जबकि दोनों संयोग एक ही उदासीनता वक्र पर स्थित हैं। अतः उदासीनता वक्र प्रतिच्छेदी नहीं हो सकता है।

(2) उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर है।—
(IC is convex to the point of origin)

उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होता है, इसका मुख्य कारण घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर है जो नीचे चित्र में स्पष्ट किया गया है।

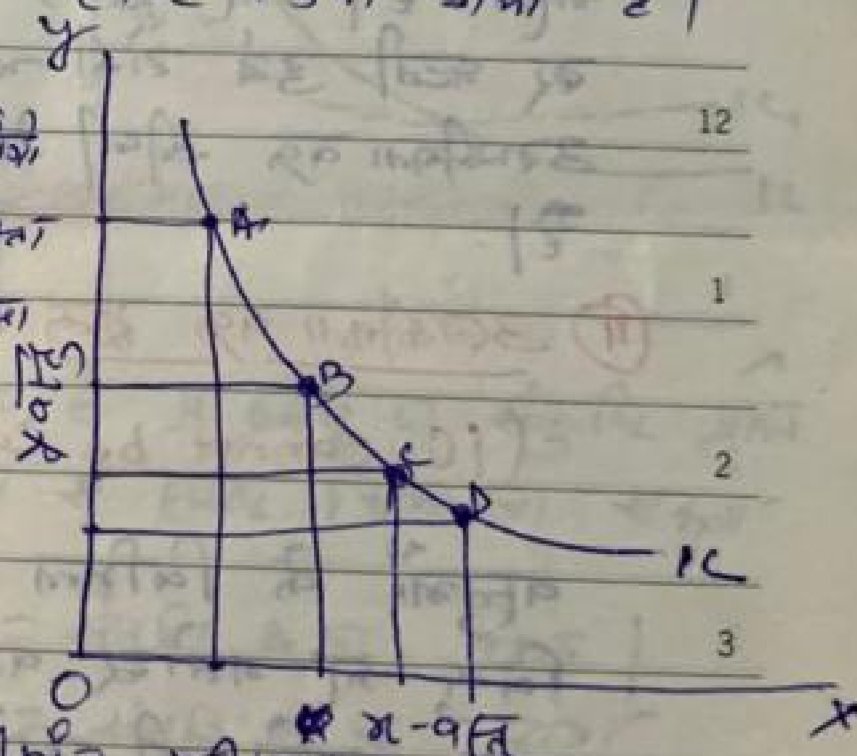

चित्र में A, B, C, D चार संयोगों को दर्शाया गया है। जब उपभोक्ता A संयोग B पर B से C पर तथा C से D पर आता है तब X-वस्तु की वृद्धि बढ़ी हुई दरों से की जाती है, जबकि Y वस्तु की मात्रा क्रमशः घटाई जा रही है। जिससे घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर लागू होता है। अतः उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होगा।

(1) उदासीनता वक्र नीचे की ओर सीधी रेखा नहीं हो सकती है:—
(IC cannot slop downward in Linear form)

यदि दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को लेकर सीधी रेखा खींची जाए तो वहाँ घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर समान होगी इसका मतलब यह है कि उपभोक्ता

(3) उदासीनता वक्र एक दूसरे को नहीं काटते (Two IC never intersect each other) →

प्रत्येक उदासीनता वक्र संतुष्टि के अलग स्तर को प्रकट करता है। इसलिए कोई दो उदासीनता वक्र एक दूसरे को काटना संभव नहीं है। नीचे चित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है।

चित्र में x-अक्ष में x वस्तु और y-अक्ष में y वस्तु की मात्राओं को दर्शाया गया है। मानाकि A बिन्दु पर दोनों उदासीनता वक्र IC और IC_1 एक दूसरे काट रहे हैं। उपभोक्ता को IC में C बिन्दु पर संतुष्टि मिलती है और IC_1 से B बिन्दु पर संतुष्टि प्राप्त होती है। अतः गणितीय ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है कि

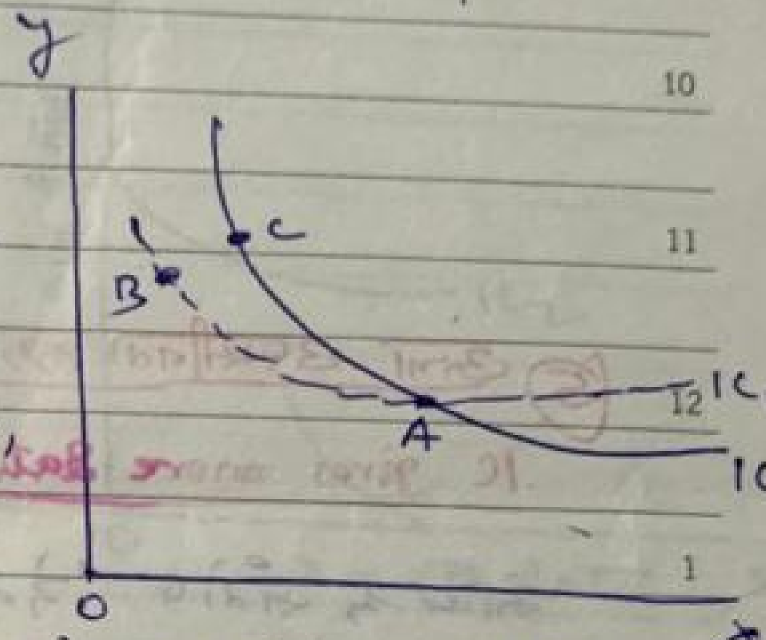

IC = संतुष्टि C पर = संतुष्टि A पर होगा।

इसी प्रकार IC_1 = संतुष्टि B पर = संतुष्टि A पर होगा।

अतः संतुष्टि C = B होगा।

चूँकि IC का संतुष्टि बिन्दु = IC_1 की संतुष्टि हो रहा है जो संभव नहीं है। क्योंकि प्रत्येक IC का संतुष्टि बिन्दु अलग-अलग होता है।

(4) उदासीनता वक्र एक दूसरे के समान्तर नहीं होते (IC may or not may be parallel to each other) →

उदासीनता वक्र एक दूसरे के समान्तर नहीं होते हैं

क्योंकि प्रत्येक IC का अलग-अलग घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर होता है। अतः ऐसा संभव नहीं है। चित्र में IC_1 IC_2 IC_3 को दर्शाया गया

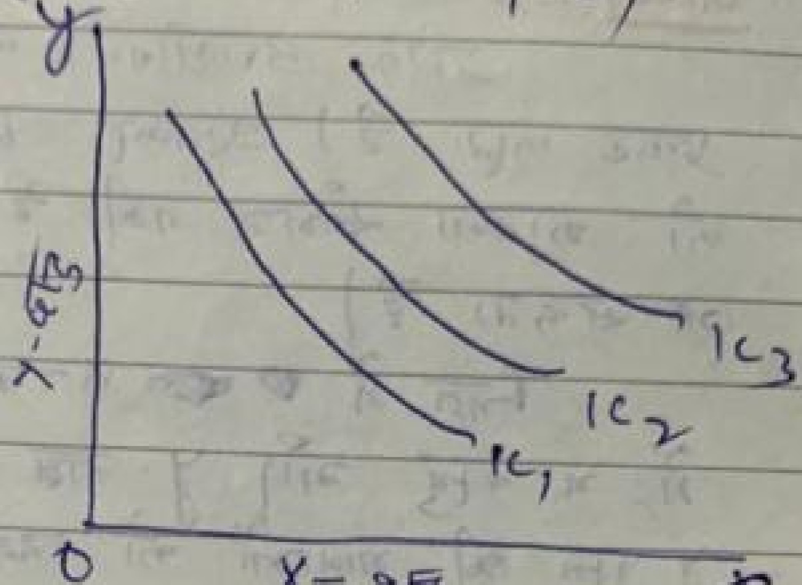

(5) ऊँचा उदासीनता वक्र अधिक संतोष देता है (Higher IC gives more Satisfaction) → ऊँचा उदासीनता वक्र अधिक संतोष देता है, नीचे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

चित्र में दो IC IC_1 और IC_2 है। IC_2 IC_1 से ऊँचा है IC_2 में संयोग Q और IC_1 का संयोग S है। उपभोक्ता को IC_2 के Q संयोग पर अधिक संतुष्टि मिलेगा IC_1 के S संयोग की अपेक्षा अतः कहा जा सकता है कि ऊँची उदासीनता वक्र अधिक संतोष देती है।

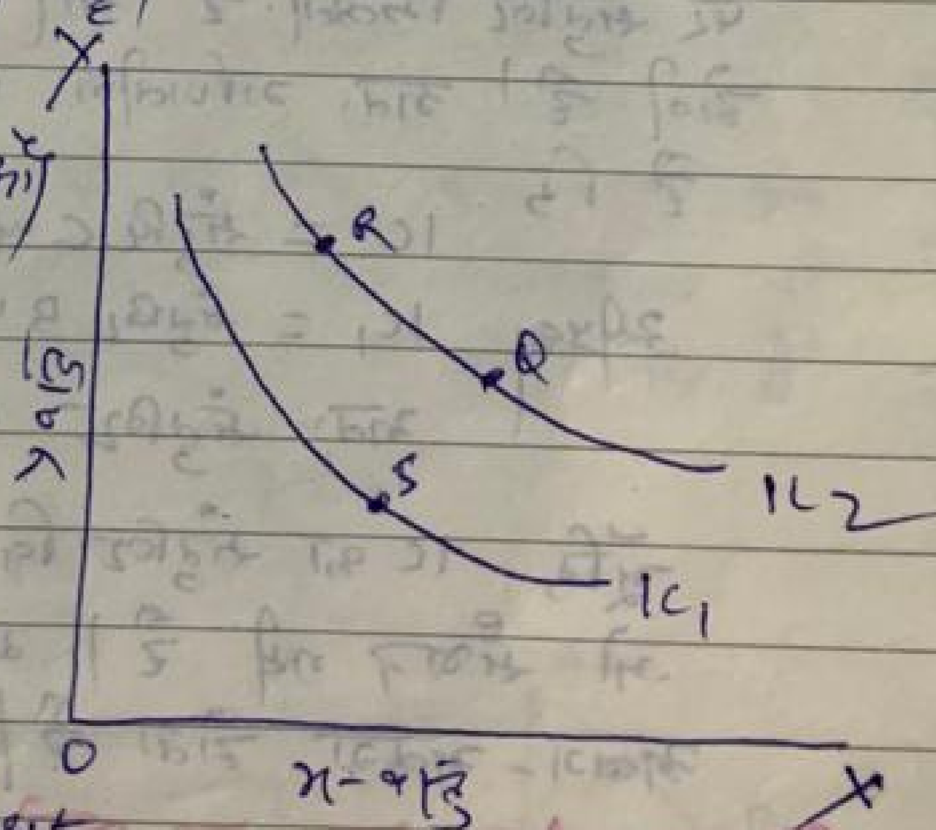

⑥ उदासीनता वक्र अक्षांशों को नहीं छूते। — IC neither touches X axis nor Y axis) । →

उदासीनता वक्र न तो x-अक्ष को छूता है और न y-अक्ष को जो नीचे चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है। जब उदासीनता वक्र किसी एक अक्ष को स्पर्श करता है तब दूसरे अक्ष की वस्तु मात्रा शून्य हो जाती है। और उदासीनता वक्र एक वस्तु का संयोग नहीं है। अतः उदासीनता वक्र अक्षों को स्पर्श नहीं कर सकते हैं।

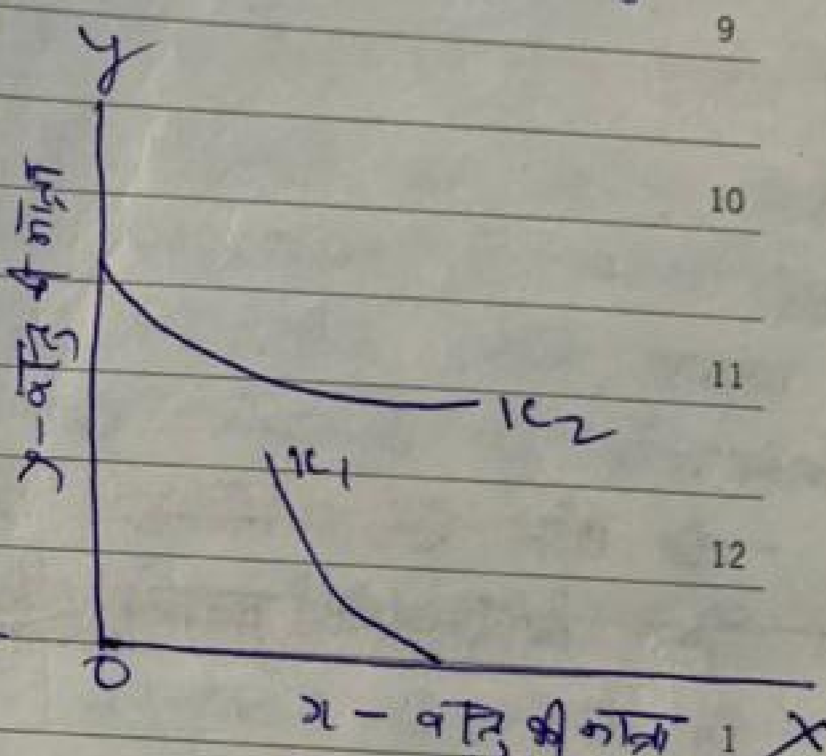

—— ○ —— ○ —— ○ ——

X-वस्तु की n वृद्धि के लिए Y-वस्तु की समान मात्रा का त्याग कर रहा है। नीचे चित्र से स्पष्ट है।—

चित्र में X-अक्ष में x वस्तु और Y-अक्ष में y वस्तु को दर्शाया गया है। चित्र उपभोक्ता X-वस्तु के समान वृद्धि के लिए Y-वस्तु का समान त्याग करता है। और चूँकि प्रतिस्थापन दर घटती हुई होनी चाहिए। अतः उदासीनता वक्र सीधी रेखा नहीं हो सकती है।

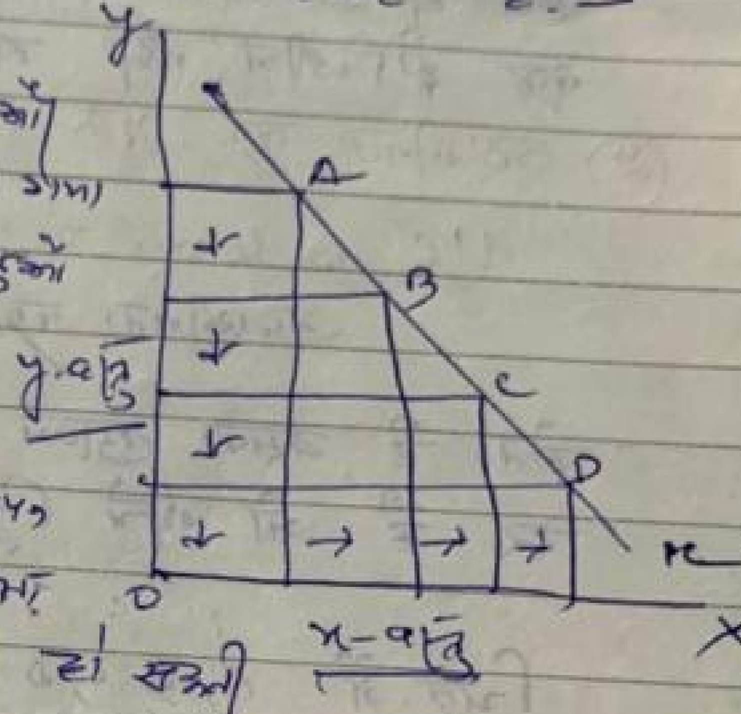

(iii) उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की नतोदर नहीं होता है:—
(IC cannot be concave to origin) → यदि दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को लेकर एक रेखा मूल बिन्दु पर नतोदर बनाई जाए तो वह प्रतिस्थापन की दर घटने की अपेक्षा बढ़ेगी, जो नीचे चित्र में स्पष्ट है।—

चित्र में स्पष्ट है कि X-वस्तु की मात्रा के बढ़ते चले आने पर उपभोक्ता Y वस्तु की पहले से अधिक इकाइयाँ त्याग रहा है। अतः उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की ओर नतोदर नहीं हो सकता है।

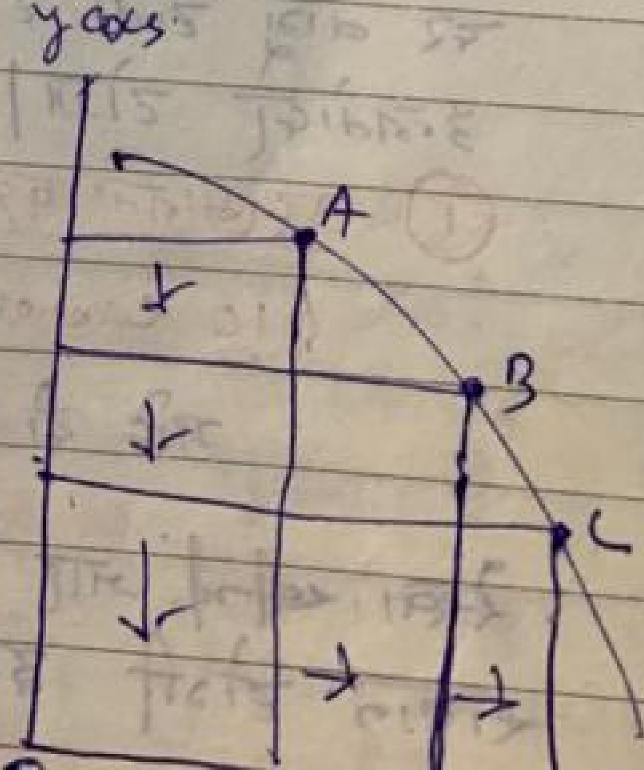

MARCH 2016
M T W T
1 2 3 4
7 8 9 10 11
14 15 16 17 18 19
21 22 23 24 25 26
28 29 30 31

सीमांत उपयोगिता आंकता रहता है। और महंगे तथा निष्क्रिय साधनों की जगह सस्ते और सक्रिय साधनों को प्रतिस्थापित करता रहता है। इस प्रकार का प्रतिस्थापन करते-करते उत्पादक एक ऐसे बिन्दु पर पहुंच जाता है जहां पर विभिन्न प्रकृति के साधनों की सीमांत उत्पत्ति समान हो जाती है।

प्रो० बेन्हम (Benham) ने इस तथ्य को निम्न प्रकार से सूत्र के द्वारा प्रस्तुत किया है।

$$\frac{\text{Marginal Return of Factor-A}}{\text{Price of Factor - A}} > \frac{\text{Marginal Return of Factor B}}{\text{Price of Factor - B}}$$

ऐसी दशा में उत्पादक B साधन की मात्रा को कम करके A साधन की मात्रा को बढ़ाता है। यह उस क्रिया को तब तक चालू रखेगा जब तक कि

$$\frac{\text{Marginal Return of Factor A}}{\text{Price of Factor - A}} = \frac{\text{Marginal Return of Factor B}}{\text{Price of Factor B}} = \frac{\text{Marginal C}}{\text{Price - C}}$$

(3) विनिमय के क्षेत्र में (exchange)

विनिमय के क्षेत्र में भी सम-सीमांत उपयोगिता नियम कार्य करता है। विनिमय के क्षेत्र में उपभोक्ता कम उपयोगी वस्तु के बदले अधिक उपयोगी वस्तु प्राप्त करना चाहता है। अतः वस्तु विनिमय प्रणाली (Barter System) में दो व्यक्तियों के बीच दो वस्तुओं का विनिमय तब तक होता है, जब तक दोनों के लिए दोनों वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता बराबर न हो जाए।

Q – सम-सीमांत उपयोगिता नियम की व्याख्या करें।
Explain the Law of Equi Marginal Utility.
or
गोसेन के द्वितीय नियम की व्याख्या करें।
Explain the Gossen's 2nd Law.
or
उपयोगिता विश्लेषण में उपभोक्ता का संतुलन
Consumer Equilibrium in Utility Analysis.

Ans – उपभोक्ता एक विवेकशील प्राणी है जिसका उद्देश्य है सीमित आय को उपभोग के अनेक क्षेत्रों में इस प्रकार बांटना कि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके। इस नियम का आधार प्रतिस्थापन नियम (Law of Substitution) है, जिसके अनुसार उपभोक्ता कम लाभदायक वस्तुओं को अधिक लाभदायक वस्तुओं द्वारा प्रतिस्थापित करता है। इस प्रतिस्थापन का क्रम सभी उपभोग वस्तुओं की सीमांत उपयोगिताएं एक समान होने तक चलता रहता है। एक उपभोक्ता संतुलन की स्थिति तब प्राप्त करता है जब वह अपने उपभोग में परिवर्तन की स्थिति न रखे, और इस स्थिति में उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होगी।

यह नियम उपभोग का आधारभूत नियम है। इसका प्रतिपादन सबसे पहले गोसेन द्वारा किया गया था, जिस कारण इसे गोसेन का दूसरा नियम भी कहा जाता है। मार्शल इस नियम को सम-सीमांत उपयोगिता नियम कहा है।